दो शब्द

श्री राजन–दिल्ली

सुन्दर साथ जी

प्रणाम–

हर साल की तरह इस साल भी अमृतसर भंडारे पर जाने का सुअवसर मिला और राज जी महाराज की मेहर से हम भी उसमें शामिल हुये। वहाँ के सुन्दर साथ में जो उल्लास और आनन्द देखने को मिलता है, उसे देखकर दिल गद–गद हो उठता है। मंदिर की तो चहल–पहल और आनन्द, चर्चा, कीर्तन मन तो कहता था कि यह कभी समाप्त ना हो। मगर ये सुख परमधाम की तरह अखंड तो नहीं। समाप्ती होनी ही थी। और समाप्ती के बाद सुन्दर साथ से बिछुड़ना और वापिस माया में आना दिल में जो टीस और पीड़ा उत्पन्न करता है, उसका ध्यान करना भी अपने दिल को स्वयं कुरेदने के समान है। परन्तु अब ध्यान फिर भी उस तरफ से हटता नहीं है। बार–बार वो नजारे जहन में कोंचते हैं। भंडारे की समाप्ती हो चुकी है। मगर दिलो-दिमाग अभी तक वहीं पर है। आतंकवाद और उग्रवाद के उस माहोल में भी वहाँ के सुन्दर साथ भंडारे की रौनक और चहल-पहल में कोई फर्क नहीं आने देते।

सुन्दर साथ की सेवा के लिये जो उत्साह और उमंग वहाँ के सुन्दर साथ में देखने को मिलता है, उसकी शायद कोई मिसाल नहीं।

राज जी महाराजा की अपार मेहर से वह शुभ कार्य सम्पन्न हुआ।

ये कुछ महीनों के मिलावे और भंडारे जब दिल में इतना सुख भर देते हैं, तो वह नजारे क्या होंगे, जब कि यह आनंद समाप्त ही ना हों अर्थात् कायम ही हों चलते ही रहें। इस बात की कल्पना मात्र ही दिल में रोमांच पैदा करती है। मगर यह कायम सुख यहाँ तो संभव नहीं। यह तो परमधाम में ही हो सकते हैं। वो आनन्द जो कभी समाप्त ही ना हो। और ये भी अब राज जी की मर्जी पर ही निर्भर है कि वह माया और दु:खों से घिरे अपने सुन्दर साथ अंगनाओं को कब उन अखंड सुखों में ले चलते हैं। कहते हैं अब आत्माओं की इच्छाओं की पूर्ति होगी, तभी यहाँ से प्रस्थान होगा। मगर यहाँ माया में रहकर कब और किसकी इच्छाओं की पूर्ति हुई है। इच्छायें कब समाप्त हुई हैं। ये तो पल–२ बढ़ती ही रहती हैं। और जितनी इच्छायें बढ़ती हैं। उतने ही दु:ख बढ़ते हैं।

अगर हम सुन्दर साथ सच्चे दिल से मिलकर राज जी महाराज से प्रार्थना करें तो शायद उनका दिल पसीज जाये और वो दुखों के इस खेल को समाप्त करें।

खैर इन दो शब्दों के साथ ही यहीं समाप्ती करता हूँ।

प्रणाम